नृसिंह गुरु

उमा कुमारि

भारत की पावन भूमि सदैव ऋषि महर्षि, कलाकार,साहित्यकार, दर्शन–वेत्ता और युगीन महापुरुषों की जन्मभूमि रही है। भारतीय संस्कृति की धर्मपरायणता की अपनी विशेषता है । इसी की आस्था से प्रत्येक भारतीय के अन्तस् में गीता का श्लोक यदा यदाहि धर्मस्य .....गुँजता है । जब धरा पर अन्याय होता है, मानव–आत्मा उससे चीत्कार कर उठती है, तभी प्रभु किसी महापुरुष के रुप में अवतरित होते हैं । पराधीनता के दीन दिनों में अंग्रेजी शासन की दासता में भारतीय आबद्ध थे । भारतीय अपना गौरव और स्वाभिमान खो बैठे थे जीवन पर सरकार का कड़ा नियंत्तण था । ऐसी विपरीत परिस्थितियों में भारतवासियों में जागृति ला कर, उन्हें सक्षमता प्रदान करने वालों में महात्मा गाँधी की भुमिका अहम् रही है । उनके वरेण्य त्याग एवं बलिदान से देश स्वाधीन हुआ । पराधीनता की बेड़ियाँ कट गयीं, समाज में व्याप्त कुरीतियों को जड़ से उखाड़ने की प्रवृत्ति लोगों में जागी । लोगों में अन्याय के खिलाफ खुल कर संघर्ष करने की भावना बलबती होती गई । सचमुच गाँधी जी देश अवतार थे, भारतीय संस्कृति के आदर्श पात्र थे, मानवता के सच्चे उपासक थे । वे शोषण, हिंसा, अन्याय और उत्पीड़न का आजीवन विरोध किए । सत्य और अहिंसा उनके अस्त्र–शस्त्र थे । दीन–दुखियों के आजन्म सहायक थे । वे भारतीय संस्कृति और विश्व–मानवता के प्रतिक थे ।

गाँधी जी की विचार–धारा को सम्बलपुर में क्रियात्मक रुप देने वालों में नृसिंह गुरु का योगदान अविस्मरणीय है । नृसिंह गुरु 'पश्चिम उड़ीशा के गाँधी' रुप में जानेजाते हैं । वे एक सच्चे समाजसेवी एवं देशसेवी थे । उनका त्यागपुर्ण जीवन सम्बलपुर वासियों के लिए प्रेरणा का स्रोत रहा है एवं रहेगा ।

सम्बलपुर के नवयुवकों को अत्याचारी अंग्रेजी सरकार के खिलाफ एकजूट कर उनमें जनजागृति लाने वाले नृसिंह गुरु का जन्म १९०२ फागुन पूर्णिमा के दिन सम्बलपुर के साशन के गुरुपाली में हुआ । उनके पिता का नाम गणेशराम गुरु और माता का नाम लक्ष्मी देवी था । ब्राह्मण परिवार में जन्म लेने के कारण धर्मपरायणता एवं आध्यात्मिकता का प्रभाव बालक नृसिंह पर पड़ा था । वे बड़े ही सौम्य एवं व्यवहार कुशल थे । त्याग, दया, क्षमा, सेवा जैसे मानवीय गुण उन्हें अपनी माता से अनायास ही प्राप्त हुआ था, जो आजीवन उनके आचरण में बना रहा । पारिवारिक वातावरण का जो प्रभाव उनके स्वभाव पर पड़ा, वह उन्हें निर्भिक एवं निस्पृह बनाया । किसी प्रकार का लाभ भी उन्हें डिगा नहिं सका । सत्यवादी एवं स्पष्टवादी होकर वे कर्मक्षेत्र में एक वीर सेनानी के रुप में आजीवन जूटे रहे ।

नृसिंह गुरु एक मेधावी बालक थे । पढ़ाई के प्रति उनमें अगाध रुचि थी । बड़े ही कुशाग्र बृद्धि वाले थे । किसी ने सच ही कहा है कि

होनहार वीरवान के होत चिकने पात । बालक नृसिंह की पढ़ाई के प्रति लगाव को देख उनके शिक्षक काफी प्रसन्न हुआ करते थे । अपने गाँव में प्राथमिक विद्यालय में प्रवेश लिए । उस विद्यालय के तत्कालीन प्रधानाचार्य श्री सागर पाढ़ी इस बालक को देख विशेष संन्तुष्ट हुए एवं उसे कास्यं पदक देकर सम्मानित किए । में भी उन्हें बहुत अच्छे अंक प्राप्त हुए एवं च्छात्रवृत्ति भी प्राप्त हुई । आगे की पढ़ाई करने के लिए उनकी दाखिला एम.ई." स्कुल पटनायकपाड़ा सम्बलपुर में करवाया गया, अपनी दक्षता एवं मेधा के कारण वे सभी अध्यापकों के प्रिय विद्यार्थी बने रहे । उनकी प्रतिभा को देख सब उनकी भूरि–भूरि प्रशंसा किया करते थे । सातवीं कक्षा उत्तीर्न करने के बाद वे जिल्ला स्कुल, सकबलपुर में प्रवेश लिए एवं वहां के छात्रावास में रहे ।

नृसिंह गुरु पर छात्रावास के सुपरिटेण्डंट कृष्ण चन्द्र सेनगुप्त का काफी प्रभाव पड़ा । उनकी राष्टीयता की भावना से नृसिंह गुरु विशेष प्रभावित हुए । उस समय देश में स्वतंत्रता की लहर अपने पुरे जोर पर थी, उसका प्रभाव भी नृसिंह गुरु पर पड़ा । १९२१ में जब वे ग्यारवीं कक्षा के विद्यार्थी थे तभी असहयोग आन्दोळन में अपने तरीके से योगदान दिए । नृसिंह गुरु काफी मेधावी थे, उनकी प्रत्ता शक्ति एवं भापण कळा को देख उनके अध्यापकगण भी प्रसन्न हुआ करते थे । नृसिंह गुरु यदि चाहते तो और भी उंचे शिक्षा प्राप्त कर अंग्रेजी सरकार के उँच पद पर आसीन हो सकते थे, किन्तु जिस हृदय में देश–प्रेम का लौ जाग गया हो, उसके लिए सारे भौतिक तत्व तुच्छ हो जाते हैं । इन्हीं भावना से प्रभावित हो नृसिंह गुर गांधी जी द्वारा छेड़ा गया असहयोग आन्दोलन में योगदान दिए । उन्हें लगा कि देश को विदेशी अत्याचारी सत्ता से मुक्ति दिलाना जरुरी है । समाहिगत हित के सामने व्यक्तिनिष्ठ भाव का कोइ महत्व नहीं होता । अतः राष्ट्रीय आन्दोळन का नेतृत्व करने का उन्होंने निश्चय किया ।

२ जनवरी १९२१ में जिला स्कुल के विद्यार्थियों की बुढ़ाराजा पहाड़ के पास एक सभा हुई जिसमें भवानी शंकर मिश्रा, अब्दुल मजिद, कृतार्थ आचार्य, चन्द्रशेखर पाणिग्राही, अरुण दास, मोहम्मद हुसेन, नृसिंह गुरु, बेनीमाधव सूपकार, जगन्नाथ मिश्र आदि ने छात्रों को सम्बोधित किया एंव विद्याळय वहिस्कार करने के साथ–साथ सम्पूर्ण हड़ताल कर अंग्रेजी सरकार के खिलाफ अपनी मंशा जाहिर की । उस दिन शाम के समय वालिबंधा के सोमनाथ मंदिर में एक सभा हुई जिसमें उस समय के सक्रिय कार्यकर्त्ता चन्द्रशेखर बेहेरा, दाशरथी मिश्रा, लड़ाभाई तारिया, रत्न सिंह भार्र, सेव राम प्रताप, जनार्धन सूपकार, आनन्दिराम शुक्ला, रामकृष्ण बेहेरा, महेन्द नाथ बर्मा ने छात्रों को असहयोग आन्दोळन में योगदान देने को प्रेरित किया । इस तरह से नृसिंह गुर राष्ट्रिय आन्दोळन में सम्बलपुर का एंव आगे चल कर उड़िशा का नेतृत्व किए ।

सम्बलपुर में छत्रिों ने जो अपना आक्रोश प्रदर्शित किया उसकि प्रशंसा बंगाल में भी हुइ । नृसिंह गुरु के नेतृत्व में सम्बलपुर के साथ–साथ बरगड़, झारसुगुड़ा, कुचिन्डा, पदमपुर, अत्ताबिरा आदि जगह के छात्रों ने विद्याळय को बहिष्कार किया एवं असहयोग आन्दोळन की सत्यता से जन–जन को परिचित करवाया । इस तरह नृसिंह गुरु की राजनीतिक यात्रा जो आरम्भ हुई, वे कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखे आजीवन वे इसी क्षेत्र में जुड़े रहे ।

गाँधी जी ने कहा था –भारत गाँव में बसता है, अतः ग्राम वासियों की स्थिति में

सुधार लाने के लिए वे सतत् प्रयत्नशील रहे। गाबँ गाबँ पैदल घुमकर बै लोगें का जागृत करते थे, उनकी समस्याओं को दूर करने का भरपूर प्रयास करते थे। ऐसे निस्वार्थी परोपकारी जीव थे, नृसिंह गुरु। १९२१ में फूजरवलब में नेशनल स्कुल की थ्थापना की गई। पंड़ति नीलकंठ दास, जो कलकता विश्वविद्यालय के प्रोफेसर थे, वे उस् नौकरीसे त्यागपत्र दे कर, नेशनल स्कुल के प्रधानाचार्य बने। इस संस्था का उद्देश्य ऐसे लोगोच को शिक्षीत करना ओ देश हितमे अपनी सहायता दे सकें। इस लोगों के निस्वार्थ भाव को देख कर बरगड़ के तत्कालीन डेपुटी मेजीसट्रेट गोपबन्धु चौधरी अपने पद से त्यागपत्र दे दिए एवं इस आन्दोळन में अपना सहयोग प्रदान किए। पटनायकपाड़ा के प्रधानाचार्य सरकारी नौकरी को तिलांझलि देकर अपने गाँव पूरी जाकर शक्ति नामक साप्ताहिक पत्रिका निकाल कर लोगों को जागृत करने का कार्यभार प्रारम्भ किए। महेन्द्रनाथ बर्मा सरकारी वकालत छोड़कर कांग्रेस कार्य में जुट गए। इस तरह सम्बलपुर में नृसिंह गुरु के नेतृत्ब में जो कार्य साधित किया गया उसकी जितनी भी प्रशंसा की जाए कम हे।

१९२१ में नृसिंह गुरु के नेतृत्ब में एक सभा हुई जिसमें चरखा कातने का कार्य को प्रभावकारी बनाने के लिए तिलक स्वराज फंड में वृद्धि की गई। नृसिंह गुरु के त्यागपूर्ण आचरण, सरल स्वभाव एवं उच्च आकंक्षा से प्रभावित होकर अनेक लोग कांग्रेस के कार्य में स्वेच्छा से भाग लिए। सम्बलपुर असहयोग आन्दोळन का गड़ बन गया। १९२१ तक नृसिंह गुर के प्रभावकारी बिचारधारा के कारण ५९३४ सदस्य कांग्रेस में योगदान दिए, २८७८ रुपये तिलक स्वराज फंड़ के लिए एकत्रित किया गया। ७००० चरखा कार्यरत था। महात्मा् गाँधी ने भी नृसिंह गुरु को भूरि–भूरि प्रशंसा की।

नृसिंह गुरु समाज में व्याप्त कुसंस्कार को दूर करने के लिए गाँव–गाँव घूमघूम कर लोगों को समझाया करते थे। चरखा कातना, छुआछूत की भावना दूर करना, शराब एवं अन्यान्य नशा को छोड़ने के लिए लोगों को जागरूक किया करते थे। नृसिंह गुरु को कई बार जेल भी जाना पड़ा किन्तु उस वीर हृदय में रंच मात्र की भी मलिनता नहीं आई, उनकी सरलता उनकी दृढ़ता दिनों–दिन बढ़ती ही गई एवं कस्तुरी मृग की कस्तुरी के समान उनकी स्थिति की सुगंधि चारों तरफ व्याप्त हेती ही रही।

१० अप्रेल १९२२ को नृसिंह गुरु के नेतृत्ब में सम्बलपुर के हरिजनों की सभा हुई जिसमें छुआछूत को जड़ से हटा देने का संकल्प लिया गया। हरिजनों को शराब एवं मांस–भक्षण छोड़ने को कहा गया। इस सभा में जन स्त्रियों भी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

२३ दिसम्बर १९२८ में गाँधी जी सम्बलपुर आए थे। स्वदेशी वस्त्राळय, खादी, चरखा इत्यदि की प्रगति को देख गाँधी जी को अपार संतोष प्राप्त हुआ था। गाँधी जी ने सम्बलपुर के कंग्रेसियों की विशेष कर नृसिंह गुरु एवं चन्द्रशेखर बेहेरा को मन से आशीर्वाद दिया था। नमक सत्याग्रह समर्थन में ११ मार्च १९३० में सम्बलपुर में बन्द का पालन किया गया, इसका नेतृत्ब भी नृसिंह गुरु ने ही किया।

१२ मार्च १९३० में नृसिंह गुरु ने खादी धारण किया एवं मृत्युपर्यन्त अपने निश्चय में अटल रहे। १२ मार्च १९३१ को सम्बलपुर में डांड़ी–दिवस के रुप में पालन किया गया। इस तरह से राष्ट्रीय आन्दोळन में नृसिंह गुरु की भूमिका अहम रही है। वे आजीवन दीन–हीनों के लिए संघर्ष करते रहे। स्वभाषा के प्रति लोगों में सच्ची श्रद्धा हो अतः वे उड़िया में

निरन्तर लिखा करते थे । वे एक सच्चे पत्रकार थे । सच्चाईसे जनता को अवगत करना ही उनका कर्म एवं धर्म था ।

नृसिंह गुरु सादगी के अवतार थे । वे वेशभूषा से ही सच्चे भारतीय कृषक लगते थे । बाह्य सरलता एवं आन्तरिक दृढ़ता उनकी पहचान थी ।

वे जितने सरल, अहिंसात्मक विचारों वाले थे, उतने ही दृढ़निश्चय एवं फौलादी विंारों वाले थे । सत्या–वेषी थे, वे परम स्वाभिमानी थे । समाज को वर्ग साम्यता लाने के लिए वे आजीवन प्रयास करते रहे । He was a 'rishi' in thought, word and deed. वास्तव मेंनृसिंह गुरु कर्म–विचार एवं भाव से महित्मा थे । अतः इन्हें पच्छिम उड़िशा का गाँधी कहा जाना अतिश्योंक्ति नहीं ।

नृसिंह गुरु सादा जीवन एवं उच्च विचार के ज्वलंत उदाहरण हैं । यह सिद्दान्त विश्व संस्कृति में मानव की चिर सम्पति रहा है । संसार के सभी महापुरुष एवं मनीषी इसी को अपनाकर मृत्योपरान्त सांसारिक जीवों पर अपना अमिर छांप छोड़ गए हैं । नृसिंह गुरु ने भी इसी संम्बलता को अपना जीवनमें अपनाए, ..., क्षमा, दया, स्नेह, सहिस्नुता, त्याग, तप, स्वाभिमान आदि अनेक गुण उनके आभूषण बन गए । निसंदेह यह भव उन्हें प्रत्य एवं परोस दोनों ही दृष्टियों से महान एवं अमर बना दिया नृसिंह गुरु ने अपने जीवन में उच्च भावना एवं विचारों को हृदय एवं मस्तिष्क में स्थान दिया । जीवन में चटक–मटक से दूर सह, छल–कपट द्वेष के भाव को नष्ट कर, सात्विक आहार का सेवन और समाज के सबके साथ स्नेह सहानुभूति रख परोपकार के लिए उन्होंने अपने आप को समर्पित किया । वैयक्तिगत स्वार्थ भावना को त्यगकर सम्बलपुर के निवासियों के सामूहिक कल्याण के लिए आजीवन तत्पर रहे।

नृसिंह गुरु एक सच्चे देशभक्त थे । किसि पद ओहदा का लोभ उनमें नहीं था । अपने कर्मों के कारण उन्हें जो यश एवं नाम उन दिनों प्राप्त था, वे चाहते तो स्वतंत्रता के पश्चात् महत्बपूर्ण की प्राप्ति कर सकते थे किंतु उनमें मानव–सेवा की भावना ही प्रवल थी । निःस्वार्थ भाव से जन–सेवा करना ही उनके जीवन का एक मात्र लक्ष्य था । वे अपने समय के सिद्दहस्त पत्रकार थे । सेवा नायक समाचार पत्र के माध्यम से वे सम्बलपुर एवं पश्चिम उड़िशा वासियों को राजनैतिक परिवेश से निरन्तर बाँधे रहते थे । उनका जीवन मानव–कल्याण को समर्पित था । १.१.८४ को सम्बलपुर के कौशल–भवन में ५० वर्ष के सम्मान में सभा आयोजित कि गई थी, नृसिंह गुरु भी सभा को सम्बोधित किए थे। वहाँ उपस्थित किसी को भी इस बात का आभास नहीं था कि यह उनकी अंतिम जन सभा होगी। २ जनवरी १९८४ को सारंगढ़ जाने समय हृदयगति रुक जाने के कारण उनकी मृत्यु हो गई । सारा सम्बलपुर शोकग्रस्त हो गया । किसी को सहसा विश्वास ही नहीं हुआ कि कर्मक्षेत्र का कभी न थकने वाला वीर सेनानी की यात्रा सहसा समाप्त हो गई । स्वर्गारोहण के पश्चात भी आज भी उनकी यश–चन्दिका उनके सिद्दान्त को अपनाने की प्रेरणा दे रही है ।

भारत माता के वरद् पुत्र, सम्बलपुर माटी के गौरव के जीवन से हमें प्रेरणा लेनी चाहिए कि सादा जीवन एवं उच्च विचार का सिद्दान्त हमारे लोक–परलोक दोनों का रक्षक होता है । मानव अपने कर्मों के बल पर पूज्य बन सकता है ।

हिन्दी अध्यापिका
केन्द्रीय विद्यालय
सम्बलपुर ।